ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 242-243
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

बदलते परिवेश में शिक्षा और शिक्षकों का मूल्य

विपुल कुमार
शोध अध्येता, समाजशास्त्र विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया (बिहार) भारत

Received- 15.11. 2019, Revised- 19.11.2019, Accepted - 25.11.2019 E-mail: raghu.saifgunj@gmail.com

सारांश : *शिक्षा व्यक्ति को परिपूर्ण बनाता है, शिक्षा के संदर्भ में विवेकानन्द ने कहा था, शिक्षा संस्कारों की जननी हैं। अर्थात, व्यक्ति समाज के बीच सामाजिक नियमों के अनुरूप अपने कार्य, व्यवहार और संस्कार तब तक नहीं अपना पाता जब तक वह शिक्षित नहीं होता। कहा जाता है कि शिक्षा मनुष्य को पशुओं से उपर उठाने वाली प्रक्रिया है, इसी प्रक्रिया के तहत मानव पशुओं से भिन्न माना जाता है। इतिहास बताता हैं कि मनुष्य का विकास या मनुष्य में बदलाव शिक्षा ग्रहण के फलस्वरूप ही संभव हो पाया।*

कुंजी शब्द– शिक्षा, व्यक्ति, सन्दर्भ, संस्कार, शिक्षित, पशुओं, मानव, इतिहास, मनुष्य, शिक्षा ग्रहण, श्रेष्ठ परम्परा

आज मनुष्य शिक्षा के स्तर में इतना आगे निकल गया हैं, जिसकी कल्पना कल कोई नहीं कर सका था। शिक्षा ने ही मनुष्य के अंधकारमयी जीवन को प्रकाशित किया है, पूर्व में बातें अजूबें लगते थे। आज वह शिक्षा से सब सत्य प्रतीत हो रहा है, या बहुत अंधविश्वास, झाड़फूक, जादू–टोना अब बहुत समाप्त होने को है।

शिक्षा के संदर्भ में कहा जाता है कि मानवों के मनोवृत्ति का निर्धारण या निर्माण उसके आचरण के अनुरूप ही होता हैं, आज समाज में छोटे–बड़े दोष जो दिखलाई पड़ रहा है, उसका एक ही कारण है–शिक्षा। शिक्षा ने व्यक्ति की मानसिक चेतना के स्तर को काकि आगे बढापा हैं।

आधुनिक समय मे शिक्षा का मुख्य उदेश्य नौकरी पाना रह गया है, हम आकड के आधार पर भी देख सकते है। शिक्षा से ज्ञान को मुख्य लक्ष्य चरित्र निर्माण होना चाहिए। आज आधुनिक समय में शिक्षित होने का तात्पर्य अधिक से अधिक पैसा कमाना रह गया है। आजादी के बाद देश में समानता और बन्धुत्व को ध्यान में रखकर शैक्षणिक विकास के लिए अनेक आयोग का गठन किया गया, जिससे आम आदमी तक शिक्षा की पहुँच हो सकें, परन्तु ठीक इसके विपरीत जैसे–जैसे समय गुजरता गया, संस्थाओं पर एक खास वर्ग का प्रभुत्व बढ़ता गया और बेहतर शिक्षा आम आदमी की पहुँच से दूर होता गया। आज शिक्षा की गुणवत्ता में तेजी से ह्रास हो रहा है। समाज में सहिष्णुता की भावना लगातार कमजोर पड़ती जा रही है। गुरू और शिष्यों के संबंधों की पवित्रता को ग्रहण लगता जा रहा है। प्रत्येक वर्ष 5 सितम्बर को डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्म दिवस शिक्षितों के अन्दर एक नई चेतना पैदा तो करता हैं, परन्तु पुनः दूसरे दिन से उस चेतना पर अमल करने वाले निरूतर ही जाते हैं। डा0 राधाकृष्ण शिक्षा में मानव मुक्ति के पक्षधर थे। वह कहा करते थे कि मात्र जानकारियाँ देना शिक्षा नहीं है, करूणा, प्रेम और श्रेष्ठ परम्पराओं का विकास भी शिक्षा का उदेश्य हैं, शिक्षा की दिशा में हमारी सोच अब इतना व्यवसायिक और संकीर्ण हो गई हैं कि हम उसी शिक्षा की मूल्यता पर भरोसा करते हैं और महत्त्व देते है, जो हमारे सुख सुविधा का साधन जुटाने में हमारी मदद कर सकें, बाकी चिंतन, कल्याण और राष्ट्र का विकास जैसी बातों को ताक पर रखकर चलते हैं। आज देश में कॉफी तेजी से विद्यालय और महाविद्यालय खुल रहे हैं, पर सबका एक ही मकसद हैं अधिक से अधिक धन कमाना। यहाँ तक कि प्रशिक्षण महाविद्यालयों का भी अब यही मतलब रह गया है, यही कारण हैं कि विद्यार्थियों का वास्तविक नैतिक विकास के स्थान पर धन कमाउ विकास हो रहा हैं, इसे हम सरकार की नीतियों के साथ जोड़कर देख सकते हैं, देश में विदेशी विश्वविद्यालय खोलने की आजादी का मतलब हैं सिर्फ मुनाफा कमाना पर अभी इसे स्वीकृति नहीं दी गई हैं। आज आवश्यकता है, देश में प्राचीन समृद्ध ज्ञान के साथ मुक्तिसंगत आधुनिक ज्ञान पर आधारित शिक्षा व्यवस्था काम करने की। देशभक्ति, स्वास्थ्य संरक्षण, सामाजिक संवेदनशीलता तथा अध्यात्म– यह शिक्षा के गत्य भवन के चार स्तम्भ हैं। इसे राष्ट्रीय शिक्षा नीति में स्थान देकर स्वायत शिक्षा को संवैधानिक स्वरूप प्रदान करना चाहिए। शिक्षा का वास्तविकता कि शिक्षा बाजार नहीं, अपितु मानव को तैयार करने का एक उतम साचा हैं जिसमें मानव में वास्तविक मूल्यों का विकास संभव हो सकें।

शिक्षा में सुधार के लिए तो अनेक समिति या अंग्रेजी शासन के समय भी बनी और आजादी के बाद भी स्वतंत्रता प्राप्ती के बाद देश में शिक्षा को आगे बढाने के लिए विभिन्न आयोग और समितियों के गठन को इस प्रकार देख सकते हैं।

1. डॉ0 एस. राधाकृष्णा आयोग–वर्ष–1984–49 विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) की स्थापना

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

2. मुदालियर शिक्षा आयोग– वर्ष 1952–53– इसे माध्यमिक शिक्षा आयोग भी कहा जाता हैं,

3. कोठारी आयोग–1964–इसमें नैतिक शिक्षा एवं सामाजिक उतरदायित्व पर ध्यान देने की बात कही गई।

4. एम.बी.बुच समिति– वर्ष 1989 में दूरस्थ शिक्षा माध्यम पर बनी पहली समिति।

5. राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर पुनर्विचार– वर्ष 1992– आचार्य रमाभूर्ति समिति।

6. जी.एम. रेडडी समिति–1992– दूरस्थ शिक्षा पर केन्द्रीय परामर्श समिति।

7. प्राफेसर यशपाल समिति–1992– बोझमुक्त शिक्षा की संकल्पना।

8. रामलाल पालेख–समिति–1993– बी.एड. पत्राचार समिति।

9. लिंग दोह समिति–1994– पत्राचार बी.एड. अवधि 14 माह अध्यापकों के लिए।

10. प्रो0 आर तकवाले समिति–1995 सेवारत अध्यापकों के लिए पत्रचार बी.एड.।

11. राष्ट्रीय ज्ञान आयोग–2005–ज्ञान आधारित समाज की संकल्पना एवं प्राथमिक स्तर से अंग्रेजी माध्यम में शिक्षा को अनिवार्य करने की सिफारिस।

12. जस्टिस जे.एस. वर्मा समिति–2012–शिक्षकों की क्षमता पर समय–समय पर जाँच।

13. राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2017

उपयुक्त संदर्भों को देखा जाय तो स्पष्ट होता हैं कि सरकार शिक्षा में सुधार के लिए अनेक आयोग एवं समितियों का गठन समय–समय पर करती रही हैं, परन्तु जैसे–जैसे समय बढ़ता गया, शिक्षा की गुणवता में कमी एवं नैतिक मूल्यों में गिरावट बढ़ता गया। इसका एक ही मतलब निकाला जा सकता है कि सरकार ने इसे गम्भीरता से लागू करने पर विचार नहीं किया। विगत 5–6 वर्षों में सरकारी विद्यालयों में उपस्थिति में सुधार हुआ हैं जिसका क्षेत्र सर्व शिक्षा अभियान को दिया जा रहा हैं अन्य कारणों प्राथमिक एवं मध्य विद्यालयों में मिड–डे–मील योजना का भी प्रभाव रहा हैं, दूसरे पक्ष में जहाँ उपस्थिति का आकड़ा तो अवश्य बढ़ा पर शैक्षणिक गुणवता पर इसका विशेष प्रभाव नहीं पड़ा है।

बदलत परिवेश में शिक्षा एवं शिक्षकों के मूल्य को काफि प्रभावित किया है, आज देखा जाता हैं कि मनुष्य अपनी प्राकृतिक आस्था से निकल कर सामाजिक और राजनैतिक व्यवस्था से संगठित हुआ है, शिक्षा उसका अभिन्न अंग वन गई है, दूसरे शब्दों में कहा जाय तो शिक्षा के कारण ही वह अपने पशु समान जीवन से मुक्त हो सका है, संस्कृत में कहा गया है कि विद्या–विहीन व्यक्ति को पशु के समान कहा गया है, प्रारंभिक अवस्था में जहाँ मानव जाति की सबसे आवश्यक, आवश्यकता भूख मिटाना तथा अपने जीवन की रक्षा करना, वही उसकी एक और आवश्यकता थी, इस दुनिया बारे में जानकरी प्राप्त करना, कहा जा सकता है कि ज्ञान जहॉ साध्य है, वहीं शिक्षा उस ज्ञान को प्राप्त करने का साधन। आज के परिदृश्य में शिक्षक के दो प्रकार हमारे समक्ष है, एक वें जिन्हे सरकारी संरक्षण प्राप्त है और दुसरा वे जो पुरी तरह से बाजारवाद पर आश्रित हैं ऐसे परिस्थिती में शिक्षकों के बीच भी प्रतिस्पर्धा है, जिससे दोनों प्रकार के शिक्षकों के बीच बाजार के नियम मुँह बाएं खड़ी है, यॉनि बाजारवाद से कोई शिक्षक बच नही सकता। आज दोनों प्रकार के शिक्षकों को अपनी–अपनी भूमिका स्पष्ट करना है साथ ही साथ गुणवता को बढ़ाना है। आज वही शिक्षक सम्मान पा सकता है जो दोनों प्रतिस्पर्धाओं को अपनाते हुए अपनी गुणवता एवं क्षमता को बढ़ा सकता है, आज आवश्यकता हैं शिक्षकों को भी अपनी नैतिक आचरण को सवारने का जिससे समाज के बीच उनका एक सम्मान कायम हो सके। शिक्षकों के मान सम्मान के लिए आज अभिभावकों को भी अपने मूल्य को ध यान में रखना होगा क्योंकि अक्सर यह देखा जा रहा हैं कि जो बच्चे घर में अनुशासित नहीं होते वे विश्वविद्यालय या घर से बाहर अत्यवहारिक होते हैं ऐसी परिस्थिति में उनका आचरण शिक्षकों के प्रति काफि बदला हुआ रहता हैं, जिससे शिक्षकों में कुंठा की भावना जागृत होती हैं। आज आवश्यकता है, समाज को अपने बच्चों में व्यवहारिकता, संस्कारिकता के गुण विकसित करने को लेकर गंभीर रहे ताकि विद्यालय, महाविद्यालय या विश्वविद्यालय में शिक्षक बच्चों में सकारात्मक विकास की कल्पना को साकार किया जा सकता है। आज आवश्यकता है शिक्षक प्रशिक्षण, विद्यालय–महाविद्यालयों में भी चरित्रवान शिक्षकों को रखा जाय जिससे छात्रों में समाज के अनुकुल शिक्षा का बाजारोपन किया जा सके ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अल्तेकर, ए. एस. : एजुकेशन इन ऐंशियेंट इंडिया, वाराणसी, 1997
2. कुंडू सी० एल० : एडल्ट एजुकेशन : प्रिसिपल्स, प्रैक्टिसेज ऐंड प्रोस्पेक्ट्स, अकेडेमिक पेपर बुक्स, नई दिल्ली, 1984
3. ड्रेपर जे० ए0 : एडल्ट एजुकेशन : ए फोकस फॉर द सोशल साईसेज, आई० ए० इ० ए० नई दिल्ली, 1986
4. राही ए० एल० (सं०) : एडल्ट एजुकेशन : ट्रेन्ड ऐंड इशूज, द इंडियन पब्लिकेशन, अम्बाला कैंट 2001

*****